E learning - online classes

SRI GANGANAGAR COLLEGE OF AYURVEDIC SCIENCE AND HOSPITAL

Principal

Dr. Subhash upadhyay

E classes

SUBJECT- PANCHKARMA

DR. KAPIL SHARMA

Assistant professor

पंचकर्म परिचय

INTRODUCTION OF PANCHKARMA

पंचकर्म = पंच + कर्म

पंच = 5

कर्म = दैव

द्रव्य

प्रयत्न

चिकित्सा

पंचकर्म कौनसे हैं????????

पंचकर्म -

वमन
विरेचन
नस्य
निरूह
अनवासन

पंचकर्म कौनसे हैं????????

१

वमनं रेचनं नस्यं निरूहश्चानुवासनम् ।
एतानि पञ्च कर्माणि कथितानि मुनीश्वरैः ॥

शा० उ० अ ८।६३ भा० प्र० पंचकर्मप्रकरण
श्लोक २, वंगसेन स्नेहाधिकार श्लोक २

"प्रथमं वमनं पश्चात् विरेकश्चानुवासनम्।
ऐतानि पंचकर्माणि निरूहो नावनं तथा।।" (भा. प्र. पूर्व 7/1)

बृहतत्रयी में पंचकर्म

सामान्यतः शोधन के अन्तर्गत पंचकर्म को स्वीकार किया गया है इसलिये चिकित्सा सिद्धान्तों में भी जहाँ पंचकर्म करना अपेक्षित है वहाँ 'शोधन' शब्द कई जगह प्रयोग हुआ है। चरक, सुश्रुत एवं वागभट्ट संहिता के सूक्ष्म अध्ययन से यह सिद्ध है कि पंचकर्मों के अन्तर्गत वमन, विरेचन, अनुवासन वस्ति, आस्थापन (निरुह) वस्ति एवं नस्य का ही समावेश है। वृहत्त्रयी में कहीं भी ऐसे श्लोक में पंचकर्म की संख्या नहीं बताई गई है। परन्तु वर्णित विषय के आधार पर यह कहा जा सकता है कि उपरोक्तानुसार ही पंचकर्म चरक, सुश्रुत एवं वागभट्ट को स्वीकार थे। आइये विचार करें।

पंचकर्म परिभाषा

तान्युपस्थितदोषाणां स्नेहस्वेदोपपादनैः।

पञ्च कर्माणि कुर्वीत मात्राकालौ विचारयन्।। (च. सू. 2/15)

दोषों के उपस्थित (उत्क्लिष्ट) होने पर पहले स्नेहन, स्वेदन कराकर मात्रा और काल का विचार कर पंचकर्म

प्रयोग करना चाहिए।

उपस्थित दोष

वक्तव्य – "उपस्थितदोषाणां" से शाखा को छोड़कर कोष्ठ की ओर प्रवृत्त होने के लिए तत्पर दोषों की अवस्था का भाव स्पष्ट होता है। यहां

पंचकर्म परिभाषा

पञ्चकर्मपरिभाषा स्नेहस्वेदादिद्वारा शरीरस्योत्क्लिष्टदोषाणां यथा-सन्नमार्गेण बहिर्निर्हरणकर्तृत्वं संशमन कर्तृत्वं च पञ्चकर्मत्वम्" ।

हि० व्या० स्नेहन-स्वेदन-द्वारा शरीर में स्थित दोषों के चलायमान अवस्था प्राप्त होने पर दोषों को यथासन्न मार्ग द्वारा बाहर निकालना तथा संशमन करना पंचकर्म कहलाता है ।

चिकित्सा के प्रकार

हिन्दी व्याख्या—चिकित्सा के प्रमुख दो उपक्रमों का वाग्भट ने वर्णन किया है, इनमें प्रथम 'अपतर्पण' तथा द्वितीय को 'सन्तर्पण' चिकित्सा कहा गया है। लंघन एवं बृंहण भी इन्हीं के पर्याय हैं।

द्विविध उपक्रम व षडविध उपक्रम

पंचकर्म चिकित्सा के आधारभूत सिद्धान्तों में विभिन्न उपक्रमों का उल्लेख आचार्यों द्वारा किया गया है। चरक में षडविधोपक्रमों-लंघन, बृंहण, रूक्षण, स्नेहन, स्वेदन तथा स्तम्भन-का उल्लेख है किन्तु वाग्भट के द्विविधोपक्रमों में इन सभी का अन्तर्भाव हो जाता है। अतः अपतर्पण एवं सन्तर्पण दोनो ही उपक्रमों का क्रमशः सन्तर्पणोत्थ एवं अपतर्पणोत्थ व्याधियों में उपयोग किया जाता है। इन्हें लंघन एवं बृंहण कर्म भी कहा गया है। इनमें लंघन कर्म दो प्रकार का है—शोधन एवं शमन। इनमें से शोधन-कर्म पांच प्रकार का होता है। ये पांचो उपक्रम ही पंचकर्म नाम से व्यवहृत हैं।

द्विविध उपक्रम व षडविध उपक्रम

चरक सूत्र 22 लंघन- बृंहणीय अध्याय में

लंघनं बृंहण काले रुक्षण स्नेहनं तथा।

स्वेदनं स्तंभनं चैव जानीते यः स वै भिषक्।। (च. सू. 22/4)

जो इन 6 उपक्रमों को जानता है वह भिषग् है।

शोधन

शोधनपरिभाषा, पञ्चविधत्वं च :—

यदौरयेद्बहिर्दोषान् पञ्चधा 'शोधनं' च यत् ।।

अ० हृ० सू० अ० १४।६ (क) अ० सं० सू० २४।७ क

यदौषधं दोषान् वातादीनन्तः स्थितान् बहिरीरयेत् क्षिपेत्तच्छोधनम् । तच्च पञ्चधा पञ्चविधम् ।। अरुणदत्तः ।।

तथा भेदकथनार्थमिदमाह-यदौषधं बहिर्दोषान् अन्तः शरीरस्थानीरयेत् प्रेरयेत् विद्यात्तच्छोधनम् । तच्च पञ्चधा पञ्चप्रकारं निरूहादिभेदेन ।।

चन्द्रनन्दनः ।।

हि० व्या० —उस उपक्रम को शोधन कहा जाता है जिससे दोष, धातु एवं मलों आदि के विकारी भावों को शरीर से बाहर निकाला जाता है । यह पांच प्रकार का है ।

पंचविध शोधन

वक्तव्य – अष्टाङ्गहृदय एवं संग्रहकार ने निरूहण शब्द में निरूह एवं अनुवासन दोनों वस्तियों का ग्रहण करते हुए पाँचवां कर्म रक्तमोक्षण बताया है।

"निरूहो वमनं कायशिरोरेकोऽस्रविस्रुतिः"

अ० ह० सू० अ० १४।८

पंचकर्म व शोधन मे अंतर

प्रश्न – क्या पंचकर्म केवल शोधन है।

उत्तर– प्रायशः शोधन है, केवल शोधन नहीं क्योंकि निरूह के भेद में बृहंण बस्ति आदि तथा नस्य के भेद- बृहंण नस्य आदि का वर्णन है।

अनुवासन बस्ति, शमन बस्ति, आदि भी केवल शोधन कर्म नहीं करती है।

चरक ने शोधन वर्णन में अनुवासन छोड़कर शेष चार माने है।

चरक ने लघंन बृहंण अध्याय में

चतुष्प्रकारासंशुद्धिः पिपासा मारुतातपौ।

पाचनान्युपवासश्च व्यायामश्चेति लङ्घनम्।। (च. सू. 22/18)

शमन

किंनाम संशमनम्

न शोधयति न द्वेष्टि समान्दोषांस्तथोद्धतान् ।
समीकरोति विषमाञ्शमनं तद्यथामृता ॥ ३ ॥

शा० पू०ख० ४ । भा० प्र० पू० ख० २२३ ।

न शोधयति यद्दोषान्समान्नोदीरयत्यपि ।
समीकरोति विषमान् शमनं·····।

अ० सं० सू० २४।८ अं० हृ० सू० १४।६

हि० व्या०—जिस चिकित्सा द्वारा प्रकुपित दोषों को संशोधन प्रक्रिया द्वारा बाहर न निकाला जाय और समदोषों को बढ़ाया न जाय तथा उत्क्लेशित किये बिना ही विषम दोषों को समान अवस्था में लाया जाय उसे संशमन चिकित्सा कहते हैं यथा-गिलोय का प्रयोग ।

शोधन व शमन के प्रकार

शमन 7 प्रकार- दीपन, पाचन, क्षुत्, तृषा, व्यायाम, आतप, वायु।

शोधन 5 प्रकार- वमन, विरेचन, बस्ति, नस्य एवं रक्त मोक्षण

संहिता में पंचकर्म

1 (a) **संहिताओं में पंचकर्म-** च.सू. 1/93

1. चरक :- आचार्य चरक ने वमन, विरेचन आदि शब्दों का प्रयोग प्रथम अध्याय से ही किया है। मूलिनी एवं फलिनी द्रव्यों का प्रयोग स्थल वर्णित करते हुए पृथक्-पृथक् वमन-विरेचन के द्रव्य कहे है परन्तु पंचकर्म शब्द का प्रयोग नहीं किया है। पंचकर्म शब्द का प्रथम वर्णन अपामार्ग तण्डुलीया- अध्याय में

प्रोक्तः संग्रहः पाञ्चकर्मिक (च. सू. 2/14) पर किया है तथा

तान्युपस्थितदोषाणां स्नेहस्वेदोपपादनैः।

पञ्च कर्माणि कुर्वीत मात्राकालौ विचारयन्।। (च. सू. 2/15)

संहिता में पंचकर्म

"दश प्राणायतनीय" अध्याय में

शिरोविरेचनादेश्च 'पंचकर्माश्रयस्यौषध गणस्य:----प्रयोषतार:।।' (च. सू. 29/7)

शिरोविरेचन आदि पंचकर्म में प्रयुक्त होने वाले औषध समुदायो का ज्ञान तथा प्राणाभिसार के लक्षण देते हुए कहा है कि पंचकर्माश्रय औषधियों का सम्यक् प्रयोग करने वाले प्राणाभिसार होते है।

चरक चिकित्सा में अनेक जगह वर्णन हैं जैसे- अपस्मार- "कर्मभिर्वमादिभि"

संहिता में पंचकर्म

तस्याशितीय अध्याय में- दोष शाखा को छोड़कर कोष्ठ की ओर प्रवृत्त होने को तत्पर अवस्था

तस्माद् वसंते कर्माणि वमनादीनि कारयेत्। (च. सू. 6/23 च. पा.) दोष चयाद्यर्थं 'पंचकर्म' प्रवृत्त्यर्थचाभिघातव्य प्रावृडादि ऋतुक्रमेण फाल्गुन चैत्रो वसंतो भवति। न वैशाखः।

यहाँ वसंत को फाल्गुन- चैत्र के अर्थ में लिया गया हैं स्वस्थवृत्त के अनुसार चय आदि से, न की वैसाख से हैं (शोधन कर्म हेतु चरक सिद्धि 6 के अनुसार है, जिसमें वैसाख माना जाता है।)

(विविधाशितपितीय) अध्याय में -

अस्थ्याश्रयाणां व्याधीनां पञ्चकर्माणि भेषजम्।

वस्तयः क्षीर सर्पींषि तिक्तकोपहितानि च।। (च. सू. 28/27)

अस्थि के आश्रित रोगों में पंचकर्म करना औषध है।

इसमें विशेषकर बस्ति और तिक्त वर्गों से सिद्ध किये हुए दूध व घृत का प्रयोग हितकर है।

Thanks for patient hearing